बंकिमचन्द्र
के अन-अनूदित निबंध
संपादन व अनुवादः
रूपा गुप्ता

बंकिमचंद्र के अन- अनूदित निबंध

संपादन व अनुवाद:

रूपा गुप्ता

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: दिसंबर, 2024

© रूपा गुप्ता

भूमिका

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय (1838-1894) के निबंध बंगला साहित्य की अमूल्य धरोहर भर नहीं हैं बल्कि वे तद्युगीन औपनिवेशिक समाज का ऐतिहासिक दस्तावेज़ भी हैं। उन्नीसवीं सदी के साहित्यकार के पास केवल साहित्य रचना कर उससे तुष्ट होने का अवकाश नहीं था इस सदी के भारतीय साहित्यकारों को उनके युग ने जो गुरुतर कार्यभार उन्हें सौंपा था उसका सम्पादन उन्होंने अपेक्षाओं से कहीं बढ़ कर किया। इस सदी के साहित्यकार एक साथ चिन्तक, विचारक, आलोचक, पथ प्रदर्शक, समाज सुधारक, इतिहासकार, जागरूक पत्रकार, संस्कृति व्याख्याता और संरक्षक, शिक्षाविद्, भाषा संस्कारक, शैलीकार और संस्था निर्माता के रूप में दिखाई देते हैं। इतिहास ने बंकिमचन्द्र को उपन्यासकार के रूप में अधिक प्रसिद्धि दी है। इस प्रसिद्धि से उनका निबन्धकार होना प्रायः ओझल -सा रहा है। जबकि धर्म, राजनीति, दर्शन, अर्थशास्त्र और विज्ञान सम्बन्धी उनके विचार उनके निबंधों में अधिक प्रांजल रूप में विद्यमान हैं।

1872 ई. में बंकिमचन्द्र ने 'बंगदर्शन' का प्रकाशन आरंभ किया। चार वर्षों बाद, 1876 में, कुछ अंतराल के लिये उन्होंने इसका प्रकाशन बंद कर दिया। 1887 ई. में बंकिमचन्द्र के भाई संजीवचन्द्र ने इसका पुनर्प्रकाशन किया। बीसवीं सदी के

आरंभ में 1901 ई. में रबीन्द्रनाथ ने 'नवपर्याय बंगदर्शन' के नाम से इस पत्र का सम्पादन किया।

1872 से 1892 ई. तक की 21 वर्षों की कालावधि में रचित बंकिमचन्द्र के निबंध मुख्यतः 'बंगदर्शन', 'भ्रमर', 'नवजीवन' और 'प्रचार' पत्रिका में प्रकाशित हुए। भ्रमर के सम्पादक संजीवचन्द्र (बंकिमचन्द्र के भाई) स्वयं अच्छे साहित्यकार थे। अक्षयचन्द्र सरकार ने 1884 ई. में 'नवजीवन' का प्रकाशन आरंभ किया था। 1884 में ही बंकिम के जँवाई राखालचन्द्र बंदोपाध्याय ने 'प्रचार' पत्र का प्रकाशन आरंभ किया था।

इसके अतिरिक्त 'मुखर्जीज मैगज़ीन' एवं 'सोसायटी फ़ॉर हायर ट्रेनिंग ऑव यंग जेन' की पत्रिका में उनके अंग्रेज़ी भाषा में कुछ निबंध प्रकाशित हुए।

सर्वप्रथम बंकिमचन्द्र ने 1872 ई. से 1876 ई. तक 'बंगदर्शन' में प्रकाशित निबन्धों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करवाया। इनमें सबसे पहले 'लोक रहस्य' नामक निबंध संग्रह 1874 ई. में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में पंद्रह निबंध संकलित किये गए। इसमें 'बंगदर्शन' में प्रथम वर्ष में प्रकाशित (वैशाख माह से चैत्र माह तक) रचनाओं में से आठ 'कौतुक एवं व्यंग्य' रचनाएँ ली गईं। इस संग्रह के प्रथम संस्करण में 'कौतुक ओ रहस्य' का भी उल्लेख था। इस संग्रह की भूमिका में बंगला भाषी पाठक को सम्बोधित करते हुए बंकिमचन्द्र ने लिखा- ''बंगदेश के साधारण पाठक का

ऐसा संस्कार है कि वह रहस्य को केवल गाली समझता है। (उन्हें लगता है) रहस्य गाली से अलग नहीं हो सकता। अतः वे समझते हैं कि इन निबंधों में जो व्यंग्य है वह किसी व्यक्ति विशेष को दी गई गाली मात्र है। इस श्रेणी के पाठकों से निवेदन है कि यह ग्रंथ उनके लिये नहीं लिखा गया- उनके अनुग्रह पूर्वक इसे न पढ़ने पर मैं कृतार्थ होऊँगा।" कहना न होगा कि 'लोक रहस्य' खूब पढ़ा गया होगा। बंकिमचन्द्र के जीवनकाल में इस संग्रह का 1888 ई. में एक और संस्करण प्रकाशित हुआ था। इसमें 'प्रचार' पत्रिका में प्रकाशित आठ और निबंध जोड़े गए थे।

1875 ई. में बंकिमचन्द्र का दूसरा निबंध संग्रह 'कमलाकान्त' प्रकाशित हुआ। ये सभी निबंध 'बंगदर्शन' में प्रकाशित हो चुके थे। यह संग्रह तीन भागों - कमलाकान्तेर दफ़्तर (कमलाकान्त के काग़ज़ात), कमलाकान्तेर पत्र और कमलाकान्तेर जॉबानबोन्दी (कमलाकान्त की ज़बानबन्दी) में विभाजित था। यहाँ उल्लेखनीय है कि 'बंगदर्शन' में 'कमलाकान्तेर दफ़्तर में प्रकाशित चौदह निबन्धों में से तीन निबंध 'चन्द्रलोक में', 'मशक' और 'स्त्रियों का रूप', उनके नहीं थे।

'बंगदर्शन' में 1880 ई. में प्रकाशित उनके निबंधों का संग्रह 1884 ई. में 'मूचिराम गुड़ेर जीवनचरित' के नाम से प्रकाशित हुआ। 1875 में प्रकाशित 'विज्ञान रहस्य' का द्वितीय संस्करण भी इसी वर्ष प्रकाशित हुआ। बंकिमचंद्र का 'विविध प्रबन्ध'- प्रथम और द्वितीय भाग क्रमशः 1887 ई. और 1892 ई. में प्रकाशित हुआ।

बंकिमचंद्र के निबंधों का अनुवाद आरम्भ किया था। बाद में, पी. एच. डी उपाधि हेतु ''उन्नीसवीं सदी का साहित्यः विचारधारा और राष्ट्रवाद, विशेष संदर्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय'' विषय पर काम करते हुए मैंने बंकिमचन्द्र के निबंधों के अनुवाद कार्य को आगे बढ़ाया। यह बड़े धैर्य और परिश्रम से होने वाला कार्य था जिसमें लंबा समय लगना था। मैंने लगाया। धैर्य और परिश्रम के परिणाम का निर्णय तो पाठकगण सुनायेंगे।

प्रस्तुत अनुवाद के लगभग सभी निबंध हिन्दी में उपलब्ध नहीं हैं। बंकिमचन्द्र के निबंधों की बहुत बड़ी संख्या हिन्दी में अभी भी अनूदित नहीं हुई है। आशा है इस दिशा में और भी प्रयास होंगे क्योंकि बंकिमचन्द्र के निबंधों के बिना उनके साहित्य की समझ खंडित रह जाती है।

अनुवाद को किसी कृति की पुनर्रचना कहा जाता है। उन्नीसवीं सदी के महान रचनाकार उपन्यास सम्राट बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के निबंधों का यह अनुवाद (या पुनर्रचना) जोखिम भरा कार्य है। इस अनुवाद के अंत में बंकिमचन्द्र के समस्त निबंधों का 'सूची पत्र' भी दिया गया है ताकि हिन्दी के पाठकों को बंकिमचन्द्र के निबंध साहित्य की बृहदता का अनुमान लग सके। सभी स्थानों पर निबन्धों के साथ प्रकाशन वर्ष न देकर उसका उल्लेख भूमिका में ही कर दिया गया है।

उन्नीसवीं सदी में रचित इन निबंधों की इक्कीसवीं सदी में प्रकाशित करने की उपयोगिता असंदिग्ध है। इन निबंधों में उठाए गए प्रश्नों को हम पिछली सदी में सुलझा नहीं पाए और न ही हमने इनमें दिये गए समाधानों का तटस्थ विश्लेषण किया जबकि उनके और हमारे ये प्रश्न हमें बार-बार टोकते रहे।

बंकिमचन्द्र के मुख्यतः बंगाल केन्द्रित इन निबंधों का सरोकार पूरे भारतवर्ष से आज भी जुड़ता है - अपनी प्रांतीयता में भी, अपनी अखिल भारतीयता में भी। बंकिम की सदी के अनसुलझे और अर्द्ध सुलझे प्रश्नों की भाषा भर बदल गई है जैसे अब भारतीयों को दुर्बल और कायर न कह कर उनमें 'किलर इंसटिन्क्ट' का अभाव बताया जाता है और इसके कारणों की खोज की जाती है। बंकिमचन्द्र के गहरे मनन- चिन्तन से सुझाए गए समाधान हमारे युग के लिये भी उपयोगी हो सकते हैं।

मौलिक रचनाकारों और अनुवादकों के कठिन परिश्रम की तुलना में हिंदी के प्रकाशकों की 'सदाशयता' की स्थिति से सभी परिचित हैं। यह पुस्तक 2010 में प्रकाशित हुई थी। प्रकाशक द्वारा अनवरत इसे बेच पाने की अक्षमता राग, अतः अनुवादिका का इतने परिश्रम की व्यर्थता के दुःख को आज प्रिंट मीडिया को धता बताती इंटरनेट पर पुस्तकें अधिक सहजता और सुगमता से उपलब्ध हैं। नीलाभ श्रीवास्तव इस दिशा में अति महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। उनके NotNul ने ऐसे व्यर्थ होते कितने ही परिश्रमों को प्रकाशक की क्रूरता से बचाया है।

NotNul से मेरी अत्यंत प्रिय पुस्तक 'साहित्य और विचारधारा' भी विद्यार्थियों को पुनः उपलब्ध हो सकी। नीलाभ को बहुत- बहुत धन्यवाद कि उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के लिए ऐसे सशक्त माध्यम और सक्रिय इच्छा शक्ति का इतना सार्थक प्रदर्शन किया है।

- रूपा गुप्ता

प्रोफेसर, वर्धमान विश्वविद्यालय

अनुक्रम

अंग्रेज़ स्तोत्र	25
व्याघ्राचार्य बृहल्लांगुल	30
बाबू	42
गर्दभ	47
दाम्पत्य दंडविधि कानून	51
रामायण की समालोचना	73
BRANSONISM	77
बंगला साहित्य का सम्मान	89
NEW YEAR'S DAY	98
प्राचीना एवं नवीना	103
तीन प्रकार	116
गौरदास बाबा जी की भिक्षा-झोली	122
बंगाली का मनुष्यत्व	128
आर्य जाति का सूक्ष्म शिल्प	134
अनुकरण	140
बहुविवाह	154
बंग पर ब्राह्मणाधिकार- प्रथम प्रस्ताव	169
बंग पर ब्राह्मणाधिकार- द्वितीय प्रस्ताव	177

बंगाल के शासन का कलपुर्ज़ा 191

बंगाल का इतिहास 199

बंगाल का कलंक 207

बंगाल के इतिहास के सम्बन्ध कुछ बातें 216

बंगाल के इतिहास के भग्नांश 228

बंगाली की उत्पत्ति- प्रथम परिच्छेद 239

अनार्य- द्वितीय परिच्छेद 248

अनार्यों के दो वंश - द्राविड़ी और कोल- तृतीय परिच्छेद 255

आर्यीकरण- चतुर्थ परिच्छेद 260

अनार्य बंगाली जाति- पंचम परिच्छेद 273

आर्य शूद्र- षष्ठ परिच्छेद 283

स्थूल कथन- सप्तम परिच्छेद 289

लोकशिक्षा 293

बंगदेश का कृषक 298

प्रथम परिच्छेद 300

ज़मींदार - द्वितीय परिच्छेद 312

प्राकृतिक नियम - तृतीय परिच्छेद 333

कानून - चतुर्थ परिच्छेद 348

मेघ 370

वृष्टि 373

जुगनू 376

प्यार का अत्याचार 380

बंगदर्शन पत्र के प्रकाशन की सूचना 391

बंगदर्शन की विदाई 401

बंगदर्शन 405

लॉर्ड रिपन के उत्सव का जमा-खर्च 407

बंगला के नये लेखकों के प्रति निवेदन 410

धर्म एवं साहित्य 413

काम 418

रामधन पोद 421

द्रौपदी (प्रथम प्रस्ताव) 428

द्रौपदी (द्वितीय-प्रस्ताव) 435

संगीत 443

बसन्त एवं विरह 451

परिशिष्ट- बंकिमचन्द्र के निबन्धों का सूची पत्र 458